अनुवादक के गुण –

अनुवाद आज विश्व के तमाम देशों के मध्य एक बहुदिशागामी तथा बिना किसी अवरोध या रोक-टोक के आवागमन प्रशस्त करने वाला फ्लाईओवर बन गया है । आज अनुवादक को एक ऐसे ईमानदार अभियंता (इंजीनियर) की भूमिका निभानी है जिसमें निष्ठा, समर्पण, जनहित, लोकहित, राष्ट्रहित तथा विश्वहित की सात्विक एवं पावन भावना भी हो । अनुवादक केवल धनार्जन के लिए अनुवाद न कर एक डॉ. की तरह कर्तव्यपरायणता तथा एक नर्स की तरह सेवा भाव से काम करना चाहिए । अनुवादक को परकाया-प्रवेश की साधना करनी होती है । अनुवादक को अनुवाद-कार्य में पूर्णतः और समग्रतः रहते हुए भी अदृश्य रहना होता है ।

1. **भाषा प्रभुत्व** (Language influence) – अनुवादक को स्त्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा की प्रकृति, व्याकरणिक व्यवस्था शैली तथा अनुप्रयोगात्मकता का अधिकारिक ज्ञान होना चाहिए । अनुवादक को स्त्रोत भाषा के मुहावरों लोकोक्तियों की, विशिष्ट प्रयोगों की, सूक्तियों-कथनों की गहन समझ बनानी चाहिए ।

2. **बहुज्ञता तथा विवेकशीलता** (Well informed with intelligence) - अनुवाद कार्य किसी सामान्य या अतिसामान्य अथवा अल्पज्ञ की ओर से संपन्न होने वाला सामान्य कार्य नहीं है । जो बहुज्ञ और विवेकपूर्ण होता है वही आदर्श अनुवाद कर सकता है । अनुवादक को स्त्रोत सामग्री का पूरा-पूरा ज्ञान होना अपेक्षित होता है । संप्रेष्य विषय की सारी बारीकियाँ उसे ज्ञात होना जरूरी है तभी उसका संप्रेषण सही हो सकता है । मूलभाषा के संदर्भ, प्रसंग, परिवेश, प्रयोजन, प्रासंगिकता, तार्किकता तथा सूचनात्मकता आदि को पहचानने की क्षमता किसी बहुज्ञ व्यक्ति में ही हो सकती है । साथ ही उसका विवेक भी अनुवाद कार्य में सहायक बन जाता है ।

3. **सतर्कता** (Careful) - सफल अनुवादक आरंभ से अंत तक सतर्क रहता है । यह सतर्कता पाठ-चयन, पाठ-पठन से लेकर मूल से मिलान अर्थात् तुलना तथा संशोधित भाषांतरण तक आवश्यक होती है । मूल लेखन में लेखक जितना सतर्क रहता है उतना ही अनुवादक को भी सतर्क रहना आवश्यक है । इससे अनुवाद कार्य स्तरीय बनता है ।

4. **संदेह निवारणकर्ता** (Ability of doubt clear) – अनुवादक सामने बहुत सारे समस्याएँ आते हैं उन्हें निवारण करने की क्षमता होनी चाहिए ।

5. **प्रतिभा** (Intellect) - प्रतिभा मनुष्य को जन्म से प्राप्त सहज देन है, यह सफल अनुवाद करने में सहायता होती है । किसी भी बात को चाहे वह सीधी-सरल हो या कठिण, समझलेने तथा कुशलता से अभिव्यक्त करने के लिए प्रतिभा का होना अनिवार्य है ।

6. **समाज एवं संस्कृति का ज्ञान** (Social & cultural knowledge) - अनुवादक को दो भाषाओं के प्रभुत्व के साथ-साथ स्त्रोत तथा लक्ष्य भाषा-भाषियों की सामाजिक तथा संस्कृतिक विषयों से संबंधित आवश्यक जानकारी होना भी अपेक्षित है । समाज की संस्कृति, विरासत, खान-पान, आचार-विचार, ईद-त्योहार, पूजा-पाठ, रूढी-परंपराएँ, वेशभूषा, रिश्ते-नाते आदि विषयों का परिचय होना जरूरी होता है ।

7. **ज्ञान-विज्ञान तथा मनोविज्ञान का परिचय** (knowledge of Science & psychology) – अनुवादक को अद्यतन एवं अधुनातन खोजों,परिवर्तनों, जानकारियों तथा उपलब्धियों का ज्ञान जुटाते रहना चाहिए । यह सतत अध्ययनशीलता से, समसामयिक जानकारियों से तथा सूचना-तंत्र के माध्यम से ही संभव हो सकता है ।

अनुवादक के दायित्व (Responsibility) –

1. **श्रध्दा एवं निष्ठा** (belief & Faith) – अनुवादक को विषय के प्रति अभिरुची होनी चाहिए । मूल लेखक के विचारों को लक्ष्य भाषा के पाठकों तक पहुचाने की निष्ठा होनी चाहिए ।

2. **कडी साधना** (Hard work) – अनुवादक को धैर्यवान, लगनशील, निष्ठावान, विवेकवान तथा अथक श्रम-साधक होना चाहिए ।

3. **सृजन-क्षमता** (Creative ability) – अनुवादक को रचनात्मकता एवं सृजनात्मकता के गुणों को भी आत्मसात् करना चाहिए । नए शब्दों के आगमन, गठन, प्रयोग-अनुप्रयोग से भी, शब्द-निर्माण की प्रक्रिया तथा आवश्यकता से भी अनुवादक को अवगत होना चाहिए ।

4. **तटस्तता** (Neutral) – अनुवादक को परकाया प्रवेश की साधना करनी होती है । परकाया-प्रवेश की यह शर्त होती है कि स्वयं को बाहर छोडकर दूसरे शरीर (रचना या रचनाकार) के भीतर प्रविष्ट होना होता है ।

5. **निष्पक्षता** (Impartial) – अनुवाद को पाठक और मूल इन दोनों के साथ न्याय करना चाहिए । अनुवादक को त्वरित बुध्दि वाला, मानसिक उपस्थिति वाला, पाठक के स्तर तथा अपेक्षा को समझने वाला, मनन-चिंतन करने वाला तथा पूर्वाग्रह या दुराग्रह से मुक्त रहने वाला होना चाहिए तभी वह सुपाठ्य एवं सहज अनुवाद कर सकता है ।

6. **वस्तुनिष्टता** (Objectivity) – अनुवादक को संवेदनशील तार्किक, सहृदय तथा विचारक दोनों रूपों में तालमेल बनाए रखना चाहिए । ऐसा करके ही अनुवादक मूल रचना और रचनाकार के साथ न्याय कर पाता है ।